एम.आर. मोरारका–जीडीसी रूरल रिसर्च फाउण्डेशन

स्टेशन रोड़, नवलगढ़, झुन्झुनू (राजस्थान)

मंगलवार, दिनांक : 03 सितम्बर, 2013 (पहला दिन) चौथी गतिविधि

स्वयं सहायता समूह – एक नजर

मोरारका फाउण्डेशन द्वारा प्रथम स्वयं सहायता समूह का गठन सन् 1993 में किया गया। दूर–दराज के गांवों में गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाली महिलाओं के समूह बनाने का कार्य शेखावाटी के नवलगढ़ एवं झुन्झुनू क्षेत्र के घोड़ीवारा कलां, मोहब्बतसरी, जाटवाली, मुकुन्दगढ़, घोड़ीवारा खुर्द, अजीतपुरा, तेतरा, मझाऊ, ढ़ाणी मझाऊ, नाहरसिंघानी, ढ़िगाल, बलवन्तपुरा, चैलासी, कसेरू, झरड़ा की ढ़ाणी, सांगासी, चूड़ी अजीतगढ़ आदि में संचालित किया जा रहा है।

संस्था को सन् 2000 में नाबार्ड से प्रोजेक्ट मिला। इस प्रोजेक्ट के तहत् 100 स्वयं सहायता समूह बनाये गये। बैंक में इनके बचत खाते खुलवाये गये। आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं को बैंकों से ऋण भी दिलवाया गया। इस ऋण के जरिये आय के स्त्रोतों में वृद्धि का कार्य किया गया। जैसें गाय, भैंस एवं बकरी खरीदना आदि व्यवसाय प्रारम्भ किये गये।

मोरारका फाउण्डेशन द्वारा नवलगढ़, उदयपुरवाटी, झुन्झुनूं, व सीकर में संचालित स्वयं सहायता समूहों को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण दिये गये। जैसे वर्मी कम्पोस्ट बनाना, बूंदी–बंधेज, फूल गोटे का कार्य, बूंटी बनाने का कार्य, दरी बनाने का कार्य, कैरी बैग बनाने का कार्य, पायदान, झूला, पापड़, मंगोड़ी बनाने का कार्य करना आदि।

कुल 133 स्वयं सहायता समूहों से लगभग 2510 महिलायें लाभान्वित हुई। जिनको बैंक से 95,74,000/– रूपये का ऋण दिलवाया गया और इन्टरलोन 1 करोड़ 20 लाख रूपये का दिया गया।

कमला देवी की सफल कहानी

गांव : मुकुन्दगढ़ **बचत राशि : 100 रू प्रतिमाह**

कुल बचत : 4500 रू **परिवार में सदस्य : 8**

दिनांक 01 अक्टूबर, 2010 को गणपती स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया। इसमें 14 सदस्य शामिल हैं। उसमें से एक सदस्य श्रीमती कमलादेवी हैं। इनके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। उनके समूह की महिलाऐ उनको समूह का सदस्य भी नहीं बनाना चाहती थी। श्रीमती कमला देवी की सहेली सन्तोष भी समूह की सदस्य हैं। उसने समूह की सभी महिलाओं को समझाया कि गरीब का सहयोग करना ही सबसे बड़ा धर्म हैं। **मोरारका फाउण्ड़ेशन की परियोजना अधिकारी विनोद देवी** ने महिलाओ को बताया कि स्वयं सहायता समूह भी गरीब महिलाओ के लिए हैं। सभी महिलाओ की सहमति से श्रीमती

कमला देवी को समूह की अध्यक्षा बनाई गयी। दिनाकं 20 मई, 2011 को कमला ने समूह से 50,000 का लोन लेकर अपने घर पर किराणा की दुकान चलाई। दुकान से प्रति माह शुद्ध लाभ 6000 रूपये का होने लगा। उसने अपनी स्वयं की बचत से लोन किस्त भी चुकाई और घर खर्च भी चलाया। उसके बाद में दिनाकं 11 सितम्बर, 2013 को 80,000रू. का बैंक लोन लेकर दुकान को और बडी बनाई।

आज कमला प्रति माह 10,000रू कमाती हैं। और बच्चो को भी पढ़ाई करवा रही हैं।

कसैरू की सफलता की कहानी

श्रीमती शांति देवी कसैरू गांव में चल रहे ''माताजी स्वयं सहायता समूह'' की 13 सदस्यो में से एक सदस्य हैं। समूह का गठन सितम्बर 2010 में हुआ। शांति देवी की इच्छा थी कि वह सभी महिलाओ के साथ मिलकर अच्छा कार्य करे। शांति 8वी कक्षा तक पढ़ी हुई हैं। शांति की आर्थिक स्थिति कमजोर है पर आगे बढ़ने की बहुत इच्छा थी।

मोरारका फाउण्ड़ेशन की परियोजना अधिकारी विनोद देवी ने स्वयं सहायता समूह / महिलाये स्वावलम्बी की बात बताई। मीटिंग में उपस्थित सभी महिलाएं शांति की बात पर विश्वास करती हैं। 13 महिलाओं का एक समूह बनाया गया जिसका सर्वसम्मती से शांती देवी को अध्यक्ष चुना गया। शांति देवी ने समूह की बैठक करके अपने समूह का खाता मुकुन्दगढ़ मण्डी शेखावाटी ग्रामीण बैंक में खुलवाया।

समय–समय पर बैंक में समूह ने पैसे जमा करवाये एवं शांति देवी ने बैंक मैनेजर को अपने समूह की बचत के बारे में बताया तब बैंक मैनेजर ने उनके गांव में जाकर समूह की मीटिंग की तथा सभी महिलाओ से चर्चा की और शांति देवी के समूह को 1,00,000रू का बैंक लोन की राशि का तीन सदस्यो में वितरण किया गया।

शांति देवी ने 40,000रू में एक गाय खरीदी। उसका दूध बेचकर उसने ऋण चुकाया। सुमन व सन्तोष ने 30,000रू का ऋण लिया। जिससे अपने बेटे को नर्सिंग करवाई। शांति देवी का कहना हैं कि सब स्वयं सहायता समूह की बचत के माध्यम से पूरा हुआ हैं।

भगवती देवी की सफलता की कहानी

गांव : नवलगढ़ **बचत राशि : 100 रू प्रतिमाह**
कुल बचत : 4500रू **परिवार में सदस्य : 8**

दिनाकं 11 फरवरी 2010 को गणपति स्वयं सहायता समूह, नवलगढ़ का गठन हुआ। **मोरारका फाउण्ड़ेशन** की ओर से 16 महिलाओ की एक मीटिंग रखी गयी जिसमें महिलाओ को बचत के बारे में बताया गया। बचत राशि एवं इन्टरलॉन के बारे में जानकारी के बाद महिलाओ का एक समूह बनाया गया। जिसमें भगवती देवी भी एक सदस्य है। सभी सदस्यों ने भगवती देवी की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण समूह की सदस्य बनाने

से इन्कार कर दिया। **मोरारका फाउण्ड़ेशन की ओर से समझाने पर उसे समूह में** तो शामिल कर लिया पर उसको लोन देने से इन्कार कर दिया। लेकिन भगवती देवी ने प्रति माह मीटिंग में उपस्थित होकर अपनी बचत राशि समय पर जमा करवायी। फिर धीरे–धीरे सभी महिलाओ को उस पर विश्वास होने लगा कि अब भगवती देवी अपने समूह की महिला हैं।

समूह की अध्यक्ष रजनी देवी ने भगवती देवी को जरूरत होने पर 5000रू का ऋण दिया। इस ऋण से भगवती देवी ने छोटी सी सब्जी की दुकान लगायी। दुकान पर सब्जी बेचने से उसे 5000रू मूल व 1000रू का मुनाफा हुआ। यह ऋण भगवती देवी ने 10 किस्तो में चुका दिया। फिर धीरे–धीरे सभी सदस्यो के विश्वास पर भगवती देवी को उसकी बेटी का ITI में नम्बर आने पर उसको स्कूल की फीस जमा करवाने के लिए समूह से फिर 20,000रू का ऋण देने का प्रस्ताव रखा।

मीटिंग में सभी सदस्यो ने प्रस्ताव में 20,000रू का ऋण भी मंजूर कर दिया। भगवती देवी ने 20,000रू का ऋण अपनी दुकान व पति की मजदूरी से चुका दिया। इस प्रकार आज समूह के सभी सदस्य भगवती देवी पर विश्वास करने लगे हैं। **श्रीमती भगवती देवी का कहना हैं कि स्वयं सहायता समूह के माध्यम से ही आज हमारे परिवार के सभी सदस्य एक सुखमय जीवन यापन कर रहे हैं।**

सन्तोष के घर की आमदनी बढ़ाने में सहयोग दिया स्वयं सहायता समूह ने

श्रीमती : संतोष देवी **गांव : मुकन्दगढ़**
बचत राशि : 100 रू प्रतिमाह **कुल बचत : 3800रू**

दिनाकं 3 जुलाई 2010 को नवलगढ़ के वार्ड़ न. 22 में श्रीमती कोमली देवी के घर पर **मोरारका फाउण्ड़ेशन की ओर से महिलाओ की मीटिंग की गई। मीटिंग में 13 महिला सदस्य शामिल हुई।** इन महिलाओ में सन्तोष देवी की पारिवारिक स्थिति बहुत ही कमजोर थी। पारिवारिक स्थिति कमजोर होने के कारण वह अपने बच्चो को पढ़ाने में सक्षम नहीं थी। बच्चो को मेहनत मजदूरी करके बड़ा किया। तथा अपने बड़े लड़के को स्वयं सहायता समूह के बारे में बताया कि मैं भी अपनी बचत 100रू प्रति माह जमा करके समूह की सदस्य बनना चाहती हूँ।

समय–समय पर मीटिंग में उपस्थित होकर समूह की मासिक किस्त राशि जमा करवाकर समूह की महिलाओ का मन जीत लिया। फिर धीरे–धीरे सन्तोष देवी के पति के स्वास्थ्य में सुधार होने लगा और वह भी मजदूरी करने लगा व पैसे कमाने लगा तथा गधा–गाड़ी से कबाड़ का सामान लाकर बेचने लगा तथा पैसे कमाकर सन्तोष देवी को देता रहा इससे परिवार में आय के साधन बढने लगे एवं धीरे–धीरे पारिवारिक स्थिति में सुधार आने लगा।

सन्तोष देवी ने कहा कि मोरारका फाउण्ड़ेशन के सहयोग ने मेरी व मेरे परिवार की आमदनी को बढ़ाने में पूरा सहयोग किया हैं। अब हमारी भी पारिवारिक व आर्थिक स्थिति संभल गयी है एवं परिवार व समाज में इज्जत होने लगी हैं।